ROOTINDEXING
INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
January-June 2023, Submitted in February 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

भारतीय चित्रकला का महत्व - लोक चित्रकलाओं के सन्दर्भ में

रेनू बाला, शोधार्थी, ललित कला विभाग, OSGU, हिसार
डा० बीना दीक्षित, प्रोफेसर ललित कला विभाग, OSGU, हिसार

सारांश:

कला भारतीय संस्कृति की परिचारक है। सभी कलाओ में अपनी प्राचीन व् अनूठी छाप रखने वाली कला चित्रकला है। प्राचीन ग्रंथो में भी चित्रकला को सबसे प्रमुख कला के रूप में उजागर किया गया है। भारत में विभिन्न संस्कृतियों का समावेश है। हर स्थान की अपनी अलग कला व् संस्कृति है , वैसे ही हर स्थान की अपनी एक लोक चित्रकला भी है। ये चित्रकलाऐ हमारे धार्मिक और आध्यात्मिक स्वरूप को अपने अंदर संजोय हुए है। इन लोक चित्रकलाओं से न केवल हमारे समाज का अस्तित्व झलकता है बल्कि ये चित्रकलाऐ हमारे मानसिक तनाव को भी कम करती है। ये चित्रकलाऐ हमारे बौद्धिक विकास को भी बढ़ावा देती है इन लोक चित्रको को आज के विषय से अवशय जोड़ना चाहिए , ये चित्रकलाऐ मनुष्य के लिए एक मैडिटेशन का कार्य करती है। जब हम चित्रकला करते है तो ये हमारे मानसिक तनाव को बिलकुल कम कर देती है या ये कहे कि बिल्कुल ख़त्म ही कर देती है।

मुख्य शब्द: लोक चित्रकला, धार्मिकता, मानसिक तनाव, बौद्धिक विकास

शोध प्रविधि:

इस शोध पत्र के लिए शोध सामग्री मुख्य रूप से द्वितीय स्त्रोतों से ली गई है। इसमें शोधार्थी ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों को भी स्थान दिया है। शोध सामग्री मुख्यत पुस्तकों, समाचार पत्रों, लेखो व् इंटरनेट से ली गई है। इस शोध पत्र के लिए बहुत सारे शोधकर्ताओं द्वारा लिखे गई पत्रों का अध्ययन किया गया है।

परिचय:

भारत की समृद्ध कला परंपरा में लोक कलाओं का गहरा रंग है। भारत विविधता की देश है , जो इस देश की लोगो , जलवायु और संस्कृति में भी झलकता है। इस देश के उतर से दक्षिण , पूर्व से पश्चिम तक बहुत सारे जातिओ के लोग रहते है जिनकी अपनी चित्रकला का अलग ही रूप होता है जिसे हम लोक चित्रकला के नाम से जानते है।किसी भी क्षेत्र या स्थान की जातियों व जनजातियों में पीढी दर पीढी चली आ रही पारंपरिक कलाओं को लोककला कहते हैं। भारत जैसें देश में विभिन्न प्रान्तों में विविध रूपों में लोककला देखी जा सकती है। जो विभिन्न नामों से जानी जाती है, जिसकी चर्चा नीचे की गयी है। लोक चित्रकला अपने प्रत्येक समूह के जातीय भेद और रचनातमक प्रतिभा को प्रगट करती है। भारीतय लोक चित्रकला समय की हर कसौटी पर खरी उतरी है। लोक चित्रकला की ये विरासत पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही है पौराणिक कथाओ और प्रकृति के सामान्य विषयो को साँझा करने के बावजूद इनमे से प्रत्येक लोक चित्रकला अपनी सुंदरता और शैली के लिए प्रसिद्ध है। लोक चित्रकला के रंग और रूप हर समय देखने वाले को

अपनी और आकर्षित करती है। ग्रामीण अंचल में लोक चित्रकला हमें अधिकतर देखने को मिल जाती है। भारत की लोक चित्रकलाओं ने दुनिआ भर में अपनी एक अलग ही पहचान बनायीं है । कला दीर्घा के इस स्तंभ में हम आपको लोक कला के विभिन्न रूपों की जानकारी देते हैं

I. **पटचित्रकला**: पटचित्रकला ओडिशा की सबसे पुरानी और लोकप्रिय लोक चित्रकला है। पट्ट नाम संस्कृत के शब्द पट्टा और चित्रा से लिया गया है। अपने अनोखे रंगो, आकर्षित करने वाले रूपों व पौराणिक आकर्तियों के कारण ये लोगो को अपनी और आकर्षित करते है। ये चित्रकला पौराणिक और धार्मिक प्रसंगों के चित्रण के लिए जानी जाती है।

II. **मैसूर चित्रकला**: यह चित्रकला कर्नाटक की मशहूर लोक चित्रकला है। मैसूर चित्रकला दक्षिण भारत में ज्यादातर की जाने वाली लोक चित्रकला है। इस कला की उत्पति अजंता काल से चली आ रही है , यह वास्तव में विजयनगर साम्राजय के संरक्षण में फैलने फूलने वाली कला है। मसूर चित्रकला ने लोगो में भक्ति और धार्मिक विचारो को प्रेरित करने में अपनी अहम् भूमिका निभाई है।

III. **मधुबनी चित्रकला**: मधुबनी लोक चित्रकला बिहार की एक जानी मानी लोक चित्रकला में से एक है। यह माना जाता है ये चित्र राजा जनक ने राम-सीता के विवाह के दौरान महिला कलाकारों से बनवाए थे। मिथिला क्षेत्र के कई गांवों की महिलाएँ इस कला में दक्ष हैं। अपने असली रूप में तो ये पेंटिंग गांवों की मिट्टी से लीपी गई झोपड़ियों में देखने को मिलती थी, लेकिन इसे अब कपड़े या फिर पेपर के कैनवास पर खूब बनाया जाता ह। मधुबनी चित्रकला बिहार के दरभंगा, पूर्णिया, सहरसा, मुजफ्फरपुर, मधुबनी एवं नेपाल के कुछ क्षेत्रों में मुख्य रूप से बनाई जाने वाली लोक चित्रकला है।

IV. **कलमकारी चित्रकला**:कलमकारी चित्रकला को चित्रकटटी भी कहा जाता है। कलमकारी आंध्र प्रदेश की अत्यंत प्राचीन लोक कला है और जैसा कि नाम से स्पष्ट है यह कलम की कारीगरी है। इसकी जड़े आंध्र के श्रीकलाहस्ति और मछलीपुरम नामक नगरों में हैं। श्रीकलाहस्ति में आज भी कलमकारी के लिये कलम का उपयोग होता है जबकि मछलीपुरम में ठप्पों का चलन है।मानव आकृतियों और चित्रों में आज भी पुराण और रामायण के प्रसंगों को चित्रित किया जाता है। कलाकृतियों के किनारों को फूल पत्तियों के आकर्षक नमूनों से सजाया जाता है।कलम कारी से चित्रित कपड़ों के परिधान, पर्दे, बिस्तर की चादरें, दीवार पर लगाने के चित्र से लेकर लैंपशेड तक सभीकुछ बनाया जा सकता है।

V. **तंजोर या तंजावुर चित्रकला** :यह लोक चित्रकला तंजोर वंश के काल में उत्पन्न हुई थी। यही एक ऐसी चित्रकला है जिसमे कीमती पत्थरो और सोने की पन्नी शामिल है। समृद्ध रंगो, चमचमाती सोने की पन्नी,कांच के मोतियों से बानी तंजोर चित्रकला हर किसी को अपनी और मोहित कर लेती है। इनसे कीमती और अर्ध कीमती पथरो का प्रयोग किया जाता है। इस चित्रकला का सबसे पहले प्रयोग हिंदी देवी देवताओ की महिमा को दिखने

में किया गया था। इन चित्रों में आमतौर पर देवी देवताओ की आकर्तियाँ गोल और दैवीय मुख्य से साथ विशाल होती है।

VI. **चरियल स्क्रॉल चित्रकला**: चेरियल स्क्रोल पेंटिंग, कपड़े पर चित्रकारी करके तैयार की जाती थीं. इनकी मदद से तेलंगाना इलाके के कहानीकार अपनी पारंपरिक लोक कथाएं सुनाया करते थे. कहानी सुनाने वाले ये लोग गांव-गांव घूमकर महान नायकों की कथाएं सुनाया करते थे. खादी के कपड़े से बने पारंपरिक चेरियल स्क्रोल पर, सबसे खास तौर पर तैयार किया गया घोल लगाया जाता ह। इस चित्रकला के माध्यम से भारतीय पौराणिक कथाओ और लोक परम्पराओ की कहानियों को चित्रित किया जाता था।

VII. **राजपूत चित्रकला/राजस्थानी चित्रकला** :राजपूतो में लोक चित्रकला की समृद्धशाली परम्परा रही है। राजपूत चित्रकला को राजस्थानी चित्रकला के नाम से भी जाना जाता है। यह चित्रकला भारत के राजपूत शाही परिवारों की दें है। यह चित्रकला मुकाय रूप से राजस्थान और मध्य प्रदेश के कूच हिस्सों मेवाड़, बूंदी, कोटा, जयपुर, बीकानेर, किशनगढ़ , जोधपुर , मालवा , सिरोही में की जाती है। पांडुलिपियों या एकल चादरों में लघुचित्रों को एल्बम में रखा जाना राजपूत चित्रकला का पसंदीदा माध्यम था, लेकिन महलों की दीवारों, किलों के भीतरी कक्षों, हवेली, विशेष रूप से, शेखावती के हवेली, किलों और महलों के निर्माण पर कई चित्रण किए गए थ।

VIII. **कालीघाट चित्रकला** :उन्नीसवीं शताब्दी में, बंगाल में समृद्ध चित्रकला का एकमात्र स्कूल ग्रामीण क्षेत्रों में लोकप्रिय स्क्रॉल पेंटिंग की पारंपरिक कला थी। ये चित्र कपड़े या पट पर किए गए थ। हिंदू देवताओं, देवताओं और अन्य पौराणिक पात्रों के चित्रण से, कालीघाट चित्रों ने विभिन्न विषयों को दर्शाने के लिए विकसित किया।इस कला के रूप में पेंट करने के लिए उपयोग किए जाने वाले ब्रश बकरी और गिलहरी के बालों के साथ बनाई जाती हैं। पहले के समय में, हिन्दू महाकाव्य श्री राम चरित मानस के पौराणिक आंकड़े और दृश्य कैनवास के बजाय कपड़े की नोक पर चित्रित किए गए थे

IX. **पहाड़ी चित्रकला** :पहाड़ी चित्रकला भारत में हिमालय की तराई के स्वतंत्र राज्यों में विकसित पुस्तकीय चित्रण शैली है, यह चित्रकला १७वी और १९वी शताब्दी के बीच की मानी जाती है। राजपूत शैली से ही प्रभावित पहाड़ी चित्रकला हिमालय के तराई में स्थित विभिन्न क्षेत्रों में विकसित हुई। परंतु इस पर मुग़लकालीन चित्रकला का भी प्रभाव दृष्टिगत होता है।पहाड़ी शैली के चित्रों में प्रेम का विशिष्ट चित्रण दृष्टिगत होता हैं। कृष्ण-राधा के प्रेम के चित्रों के माध्यम से इनमें स्त्री-पुरुष प्रेम सम्बंधों को बड़ी बारीकी एवं सहजता से दर्शाने का प्रयास किया गया है।

X. **वर्ली चित्रकला**: वारली चित्रकला एक प्राचीन भारतीय कला है जो की महाराष्ट्र और गुजरात की एक जनजाति वारली द्वारा बनाई जाती है, इस चित्रकला की उत्पत्ति ३००० इसा पूर्व

हुई थी। यह कला उनके जीवन के मूल सिद्धांतो को प्रस्तुत करती है। इन चित्रों मैं मुख्यतः फसल पैदावार ऋतु, शादी, उत्सव, जन्म और धार्मिकता को दर्शाया जाता है। यह कला वारली जनजाति के सरल जीवन को भी दर्शाती है।इस चित्राकल में गेरू की और सफ़ेद रंग से दीवारों पर चित्रकारी की जाती है।

XI. **गोंड चित्रकला**: गोंड कला गोंड जनजाति की उपशाखा परधान जनजाति के कलाकारों द्वारा चित्रित की जाती है। जिसमें गोंड कथाओं, गीतों एवं कहानियों का चित्रण किया जाता है जो परम्परागत रूप से परधान समुदायों के द्वारा गोंड देवी देवताओं को जगाने और खुश करने हेतु सदियों से गायी जाती चली आ रही हैं।यह मुख्यत मध्य प्रदेश, आंध्रा प्रदेश, महाराष्ट्र , छत्तीसगढ़ और ओडिशा की जनजातियों द्वारा बनाई जाती है।

लोक चित्रकलाओं की एक झलक

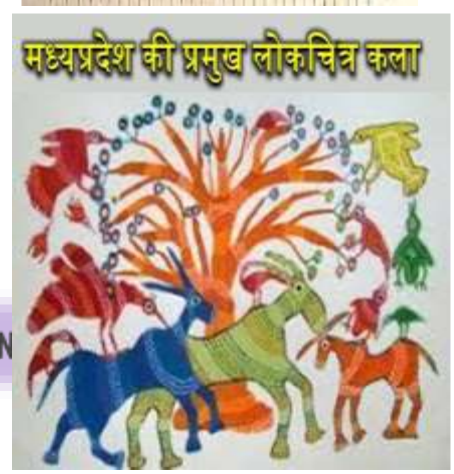

मानसिक तनाव को कर करने में चित्रकला का योगदान :

आज के समय में तनाव लोगों के लिए बहुत ही सामान्य अनुभव बन चुका है, जो कि अधिसंख्य दैहिक और मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रियाओं द्वारा व्यक्त होता ह। चित्रकारी आपके तनाव को कम करने में मददगार साबित हो सकती है। ऑर्ट थेरेपी जर्नल में प्रकाशित हालिया शोध में खुलासा हुआ है कि चित्रकारी करने से शरीर में पाए जाने वाले तनाव के लिए जिम्मेदार हार्मोन्स का स्तर कम हो जाता है। इस बात का कोई फर्क नहीं पड़ता है कि आप चित्रकारी करने में माहिर हैं या

नहीं।भारतवंशी शोधकर्ता समेत ब्रिटिश वैज्ञानिकों का कहना है कि तनाव के लिए जिम्मेदार कोर्टिसोल जैसे हार्मोन के स्तर का पता लगाने के लिए लार के नमूने की जांच की जाती है। जिस व्यक्ति के शरीर में कोर्टिसोल का स्तर जितना ज्यादा होता है, उसके तनाव में होने की संभावना उतनी ज्यादा होती है।

बौद्धिक विकास में सहायता करती है चित्रकला:

चित्रकला व्यक्ति के बौद्धिक विकास में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पूर्ण परिपक्वता तक वृद्धि करने के लिए और अपनी शक्तियों के संपूर्ण विकास हेतु हमें अपनी नैसर्गिकता का पोषण करना चाहिए, जिससे हम अपने विचारों और अनुभवों से समाज को अपना विशिष्ट योगदान कर सकें। इसके लिए कला विशेष रूप से उपयोगी है क्योंकि यह मौलिक चिंतन, कार्य और मूल्यांकन पर बल देती है।शारीरिक एवं बौद्धिक विकास की अवस्था में बालक अनेक तनावपूर्ण स्थितियों का सामना करता है। स्वतंत्र प्रकाशन को प्रोत्साहित करके कलात्मक अनुभव उन संवेगात्मक तनावों और भय को दूर करता है। यह बालक में आत्मविश्वास जगाता है और उसके संवेगात्मक सामंजस्य में सहायता करता है। जब बालक प्रकाशन में स्वतंत्रता का अनुभव करता है तब उसका व्यक्तित्व परिपक्व होने के लिए स्वतंत्र होता है । उच्च स्तर के प्रशिक्षित कला विशेषज्ञ, बालक के संवेगात्मक सामंजस्य,उसकी अनुभव की शक्ति और सौंदर्यानुभूति की चेतना को बढ़ा सकते हैं।

<u>मानसिक तनाव को कम करने के लिए चित्रकला की सहायता से किये जा रहे प्रयास</u> :

केंद्रीय विद्यालय विदिशा में सुभाष चंद्र बोस की जयंती के दौरान बच्चों का तनाव को कम करने के लिए हुई प्रतियोगिता में केवी सहित नवोदय विद्यालय शमशाबाद, विभिन्न सीबीएसई स्कूल, निजी विद्यालय एवं राज्य सरकार के विद्यालयों के विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया।तनाव और परेशानी आज हमारे जीवन का हिस्सा बनती जा रही है। कभी-कभी इन तनाव भरी स्थितियों और जिम्मेदारियों का प्रबंधन करना बहुत मुश्किल हो जाता है। ऐसे में आजकल अधिकांश लोग अवसाद और तनाव जैसी समस्याओं के अलावा न्यूरो संबंधी विभिन्न बीमारियां से निजात पाने के लिए कला चिकित्सा का सहारा ले रहे हैं। कला चिकित्सा के तहत कला के विभिन्न माध्यमों से मरीजों की मनोदशा को समझने का प्रयास किया जाता है।

WHO की रिपोर्ट के अनुसार भारत में हर चौथा किशोर मानसिक तनाव से ग्रसित है। इसी मानसिक तनाव के बढ़ते आंकड़े के मधय नजर चिकित्सा में एक नया आयाम देखने को मिला है। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ मेंटल हेल्थ एंड न्यूरो साइंस (निम्हंस) ने 2016 में देश के 12 राज्यों में एक सर्वेक्षण करवाया था. इसके बाद कई चिंताजनक आंकड़े सामने आए हैं.आंकड़ों के मुताबिक आबादी का 2.7 फ़ीसदी हिस्सा डिप्रेशन जैसे कॉमन मेंटल डिस्ऑर्डर से ग्रसित है.जबकि 5.2 प्रतिशत आबादी कभी न कभी इस तरह की समस्या से ग्रसित हुई है.इसी सर्वेक्षण से एक अंदाजा ये भी निकाला गया कि भारत के 15 करोड़ लोगों को किसी न किसी मानसिक समस्या की वजह से तत्काल डॉक्टरी मदद की ज़रूरत है.चिकित्सा के क्षेत्र में कला चिकित्सा भी अपना योगदान दे रही है।

चित्रकला में वर्तमान में ले लिया चिकित्सा का रूप :

कला चिकित्सा (आर्ट थेरेपी) मनोचिकित्सा का एक रूप है। यह एक ऐसी तकनीक है, जो मौखिक और बिना बोले शब्दों को भी बयां कर देती है। जिन लोगों को अपने विचार व्यक्त करने और बातचीत करने में परेशानी होती है, उनके लिए यह थेरेपी काफी लाभदायक होती है। इस थेरेपी के जरिए वे अपनी बातों और भावनाओं को प्रकट कर सकते हैं।

देश के सभी शहरों में कला चिकित्सा से इलाज का प्रचलन बढ़ता जा रहा है। निजी अस्पतालों में कई गंभीर और लंबे समय तक इलाज की पद्घतियों में यह कारगर साबित हो रही है। अस्पतालों में कला चिकित्सा का इस्तेमाल करने वाले मरीजों की संख्या बढ़ रही है। मरीजों की मनोदशा को समझने के लिए यह पद्धति उपयोग में लाई जा रही है। तनाव प्रबंधन में कला चिकित्सा का काफी इस्तेमाल किया जाता है। तनाव और अवसाद को दूर करने में यह सबसे बेहतरीन उपचार साबित हो रहा है।

निष्कर्ष :

भारतीय संस्कृति को जीवित रखने में लोक चित्रकलाय अपनी अलग भूमिका निभाती है। लोक चित्रकला का महत्व सदिओं से चला आ रहा है। लोक चित्रकलाओं को जीवित रखने के लिए पारम्परिक और आधुनिक दोनों साधनों का प्रयोग किया जा रहा है। वर्तमान में भारतीय लोक चित्रकला अंतर राष्ट्रीय पटल पर स्थापित होकर लोकप्रिय हो चुकी है। भारत की लोक चित्रकारी ने भारत में ही नहीं अपितु दुनिआ भर में अपनी अलग पहचान बना ली है। मानसिक सवास्थय को ठीक रखने में भी चित्रकला अपना एक अलग ही योगदान देती है। ललित कलाओ के सृजन से दमित प्रवर्तियों का दमन होता है। कला चेतन और अचेतन को एक करने में बड़ी सहायक होती है। कला मनुष्य के दिल और दिमाग को गहरी संतुस्टि और आनंद प्रदान करती हैं। जब कोई चित्रकला करता है तो वह सब प्रकार के तनाव से मुक्त हो जाता है क्योकि चित्र बनाते समय उसके मन में वही भाव रहता है जो वो चित्रकारी में दिखाना चाहता है। मन को शांत करके ही चित्रकला की जा सकती है क्योकि चित्रकला में माधुर्य , सौन्दर्य , रूप आदि को दिखाना अनिवार्य

होता है। कला की मौलिक रचना से कलाकार के मानसिक सवास्थय का राज छुपा है। अतः कलामनुष्य के जीवन में आनंद लाती है, और उसे मानसिक तनावों से दूर रखती है।

सन्दर्ग सूचि :

I. चिरंजी लाल झा , कला के दार्शनिक तत्व , पेज -194
II. जी के अग्रवाल, कला समीक्षा , पेज -56
III. फोक एंड ट्राइबल पैंटिंग्स : द वर्ली स्कूल - अकादमी ऑफ़ फाइन आर्ट एंड लिटरेचर - गूगल आर्ट & कल्चर। बराल और अन्य (२०१८)
IV. डा० गिरिराज किशोर अग्रवाल - कला और कलम
V. भारतीय चित्रकला में ललित कला व् लोक संस्कृति का समावेश - कंचन कुमारी , वॉल५ (ISSN १२) दिसंबर २०१७
VI. आधुनिक भारतीय परिधानों में लोक कलाओ का समन्वय : एक समीक्षा , श्री मति शालिनी पाण्ड्य , वोल०७, N। ०१, जनवरी २०२२, पेज ८२-८५ , ISSN २४५५-३०८५
VII. राजस्थान के विशेष सन्दर्भ में भारतीय चित्रकला का विकास- िस्सं: २३४८-६८४८ volume ०४ issue १५ (नवंबर २०१७)
VIII. परम्परागत चित्रकला पर नवीन प्रवर्तिया का प्रभाव - रंजीता मौर्य -© 2018 IJCRT | Volume 6, Issue 1 March 2018 | ISSN: 2320-२८८२
IX. भारतीय आधुनिक चित्रकला एवं महिला चित्रकार-डॉ. सुनीता शर्मा, पृष्ठ :512, पुस्तक क्रमांक : १६१५९
X. लोक चित्रकला (मधुबनी)-रविंदर लाल दस -पुस्तक क्रमांक ५०५४, पेज १६, प्रकाशित (२००४)
XI. भारतीय चित्रकला का विवेचन -डा० आर ए अग्रवाल -पुस्तक (जनवरी २०१७)
XII. मिथिला की लोक चित्रकला -अवधेश अमन -जनवरी २०१९
XIII. विकिपीडिया डॉट कॉम
XIV. गूगल डॉट कॉम
XV. लेख